# ''संतों की इस जमी पर''

**डॉ. राकेश तिवारी**
**म.रा.दास पी0जी0 कॉलेज**

पतितपावती जगततारिणी माँ भागीरथी की अविरल धारा की। भाला को धारण करने वाली भूतभावन भगवान काशी विश्वानाथ की नगरी काशी को स्थित महामना मदन मोहन मालवीय जी की कर्मस्थली काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अध्ययनोपरान्त ज्ञान, भक्ति ाैर भजन की मेखला को धारण किये मैं डॉ. राकेश तिवारी अपने कर्तव्य पथ पर चलते हुए भाग्यकशात् या प्रारब्धवशान् इस तपोभूमि पर स्थित महाविद्यालय में संस्कृत प्राध्यापक के रूप में सेवा का सुअवसर वर्ष जुलाई २००९ से प्राप्त किया जो अद्यतन है।

भुड़कुड़ा भूमि का स्वरूप किसी संत ने इस प्रकार लिखा है-

भुड़कुड़ा भूमि सुहावनी सकल जगत सिरभौर।
भाग खुले दर्शन मिले, छुटे मोह सड़ोर।।

मेरे मान में वास्तव में यह भूमि सुहावनि है और सम्पूर्ण जगत् का सिरमौर भी है यहाँ आप जिस भाव से कार्य करेंगे वैसे ही फल सफलीभूत होता है। यहाँ के प्रत्येक कण से राम का संयोग स्वरूप दिख पड़ता है यथा रामशाला, रामअखाड़ा, रावन आदि स्थल स्वत: राममय है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के भाव से कहा जाय तो

सीयाराम मैं सब जगजानी, करहु प्रमाण जोरि जुग पाणी। इसी भाव का प्रमाण हमारे उपनिपदों में भी मिलते हैं ''सर्व खलुभिदंब्रह्म'' अर्थात् यह सम्पूर्ण संसार ही ब्रह्मम है।

भुड़कुड़ा वह भूमि है जहाँ साहेब वन्दगी से सुबह की स्तुति की जाती है औ साहेब वन्दगी से ही नित्यसन्ध्या होती है।

यहाँ प्रत्येक घर में संतों की वाणीयाँ गुंजती है- लोग कहते हैं-

पहले गुरू को गाइये जो गुरू रचा जहाँन
पानी से पैदा किया गुरू, अलख पुरुष निर्वाण
अलख पुरुष निर्वाद है उनको लखे न कोय

उनको तो वाहि लखे जो वही घर का होय
भारी बारी प्रेम की गद्दी बूलादास
जनि गुलाल शाखा भयो आदि शक्ति ारकाश
उपजी भक्ति भुड़कुड़ा पायो भीखानन्द
सत गोविन्द परगट भयो सात द्विपनवखण्ड
सात द्विषनवखण्ड में गुरू समान न कोय।
वहाँ न कर्ता कर सके गुरू करे सो होय।।

इस प्रकार यहाँ के जन-जन में गुरू के प्रति अपार श्रद्धा न विश्वास है। प्रत्येक गुरूवार के दिन सुबह की आरती में अधिकाधिक सरला संरगा में भक्त जन गठ में पूजा में दूर-दूर सम्मिलित होते हैं यह गुरु परताप ही है। उनका यह मानना है कि सृष्टि का संचालन संरक्षण जो हो रहो है वह राम कहो, गुरू कहो, ब्रह्म कहो, कृष्ण कहो या शिव कहों वह एक ही है अर्थात् तेरे नाम अनेक तू एक ही है। या संत वाणी में कहे तो नदियों एक घाट बहुतेरे वही इनके आधार है।

सिद्धपीठ आश्रम में वार्षिक उत्सव अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर विजयादशमी तक चलता है। इन दस दिनों में प्रतिपद की प्रात: काल से मठ में स्थित श्री हनुमन्त लाल के मंदिर में कलश स्थापन के साथ श्री रामचरित मानस का अवाह्नपाठ का प्रारम्भ ग्यारह मानस पाठियों के द्वारा पीत परिधान धारण कराके सुबह और शाम पारायण किया जाता है और शाम ४ बजे से मठ के बरामदे में संतवाणी की भजनों का सस्वर शासन स्थानिय

और क्षेत्रीय भक्तजनों के द्वारा मृदगां, व झाल के साथ महाराज श्री के संरक्षण में बहुत नोरम ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। विजयादशमी के दिन प्रात: काल में नवाह्नपाठ का समापन हवन व मेरे द्वारा महाराज श्री की आरती के साथ मानस पाठियों को दक्षिणा प्रसाद वितरण के उपरान्त समाप्ति जी की जाती है।

विजयादशमी के दिन ठीक मध्याह्न १२ बजे समाधि जी की आरती श्री महाराज जी के द्वारा सम्पन्न को जाती है और दहेणी सहित विविध प्रकार के व्यञ्जन व पकवानों का भोग महाप्रसाद के रूप मं लगाया जाता है। सायं काल में समाधि प्राङ्गण में स्थित प्रवचन मंच के माध्यम से दूर-दूर से पधारे हुए संतजनों, साध्वीयों द्वारा वाणी, भजन, पद कीर्तन व प्रवचन का कार्यक्रम भी मेरे संचालन में सम्पादित किया जाता है। रात्रि आरती के लिए सभी भजना नदी बाबू मर्जाद सिंह के निवास स्थल जो मठ के बगल में इमली के पेड़ के पास है वही से भजन गाते हुए महाराज श्री की आरती धानापुर के लोगों द्वारा सपरिवार मठ आँगन से रात्रि ग्यारह बजे की जाती है उसे समय आसन पर विराजामन श्री महाराज जी अपने परम्परागत परिधान सिली व टोपी धारण किये हुए भक्तों द्वारा चवर डुलावन का दृष्य मन मोहक होता है। महाराज श्री द्वारा महाप्रसाद का वितरण व तत्काल भक्तजानों की पङ्गत बैठती है और हरिहर (रात्रि भोज) का आयोजन होता है और भक्तजन, संतजन प्रभु प्रसाद प्राप्त करके निज-निज गृह प्रस्थान करते है। यदि भुड़कुड़ा के मनोरम दृष्यों के अवलोकन व सम्पादन करने का सुअवसर प्रभुकृपा व संताशीष प्राप्त हो रहा है वो मेरे पूर्वजन्म का फल है जो इस भक्ति पथ का मैं पथिक बन पा रहा हूँ और भुड़कुड़ा द्वारा प्रदत्त उपनाम टीका महाराज को सफलीभूत कर रहा हूँ। ''साहेब सतनाम्''

***

## पहली उंगली जिनकी पकड़ी

**- फराना बानो**

एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

पहली उंगली जिनकी पकड़ी
जिनसे पहली शिक्षा पाई
मात-पिता वो थे मेरे
जिसने मुझे पहली राह दिखाई
पर क्या इतने में ही
मेरा जीवन पूर्ण हुआ?
नहीं.....
अभी एक प्रकाश का
जीवन में माना बाकी था
जब विद्यालय पांव धरा
तब जाना क्या छूटा था
एक खान था शिक्षा का
जो बिन शिक्षक ना मिलना था
आप सभी गुरुदेवों ने
मुझको आगे का ज्ञान दिया
मात-पिता के सम बनकर
जीवन का कल्याण किया
अभी ये स्नेह बना है मुझपर
अभी शिक्षा बहुत ही पानी है
मेरे गुरुओं नमन आपको
आप सबसे ही जुड़ी मेरी कहानी है.....

***